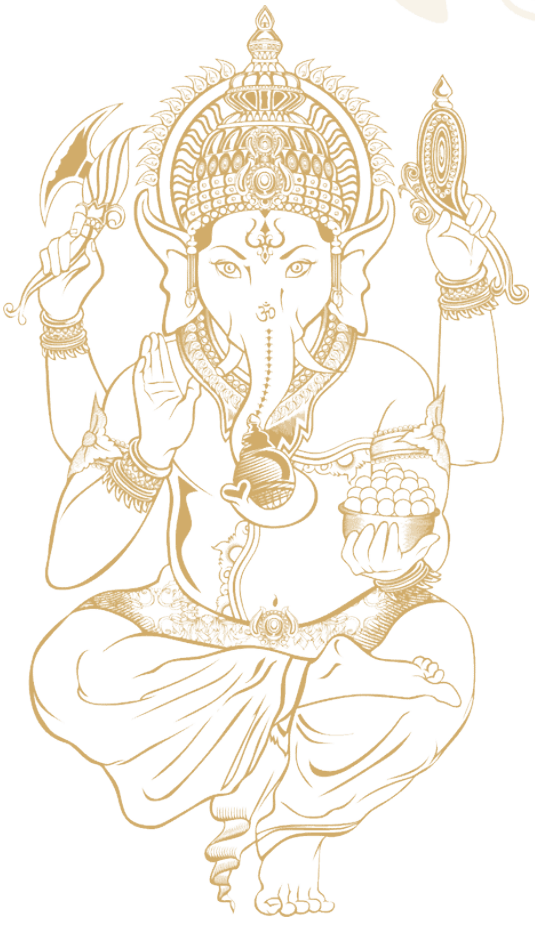

Vijai shing

Snjna kvar

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120950102

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/07/2000	जन्म तिथि	18-19/04/2001
गुरुवार	दिन	बुध-गुरुवार
घंटे 18:30:00	जन्म समय	01:00:00 घंटे
घटी 31:22:12	जन्म समय(घटी)	47:09:19 घटी
India	देश	India
Jaitaran	स्थान	Ajmer
26:14:00 उत्तर	अक्षांश	26:29:00 उत्तर
74:00:00 पूर्व	रेखांश	74:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:00	स्थानिक संस्कार	-00:31:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:57:07	सूर्योदय	06:05:21
19:23:59	सूर्यास्त	18:56:29
23:51:39	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:13

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 1वर्ष 8मा 0दि		27:35:37	धनु	लग्न	धनु	27:04:22	राहु 14वर्ष 4मा 10दि	
राहु		10:55:37	कर्क	सूर्य	मेष	04:56:43	गुरु	
29/03/2009		21:06:30	वृष	चंद्र	कुंभ	09:21:43	29/08/2015	
29/03/2027		03:12:36	कर्क	मंगल	धनु	02:16:05	29/08/2031	
राहु	10/12/2011	21:13:54	मिथु	बुध	मीन	29:50:42	गुरु	16/10/2017
गुरु	04/05/2014	11:20:32	वृष	गुरु	वृष	17:05:59	शनि	29/04/2020
शनि	10/03/2017	23:36:27	कर्क	शुक्र व	मीन	07:37:26	बुध	04/08/2022
बुध	28/09/2019	05:13:49	वृष	शनि	वृष	05:52:53	केतु	11/07/2023
केतु	15/10/2020	00:44:49	कर्क	राहु व	मिथु	15:25:00	शुक्र	11/03/2026
शुक्र	16/10/2023	00:44:49	मक	केतु व	धनु	15:25:00	सूर्य	29/12/2026
सूर्य	09/09/2024	25:33:45	मक व	हर्ष	कुंभ	00:17:49	चन्द्र	29/04/2028
चन्द्र	11/03/2026	11:19:44	मक व	नेप	मक	14:46:21	मंगल	04/04/2029
मंगल	29/03/2027	16:26:54	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	21:08:22	राहु	29/08/2031

लग्न-चलित

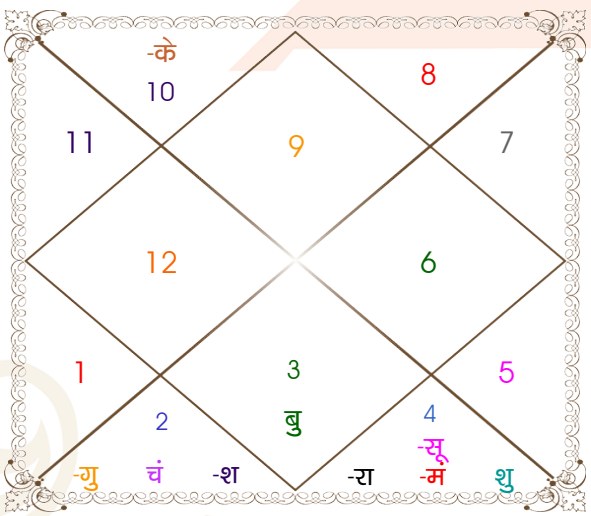

लग्न-चलित

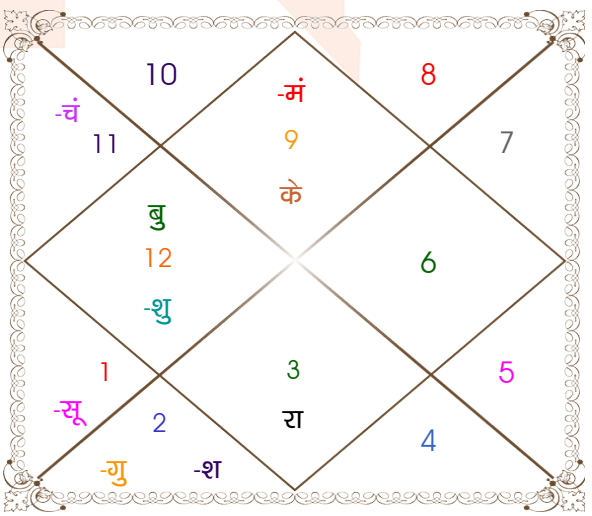

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृष	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

टपरंपोपदह का वर्ग मृग है तथा दरदं ाअंत का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार टपरंपोपदह औरै दरदं ाअंत का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

टपरंपोपदह मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल टपरंपोपदह कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु टपरंपोपदह कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

दरदं ाअंत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ैदरदं ाअंत कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि टपरंपोपदह कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

टपरंपोपदह तथा ैदरदं ाअंत में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।